67th Independence Day Celebration at AIIMS 15-08-2013 Director's Speech

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

All India Institute of Medical Sciences New Delhi

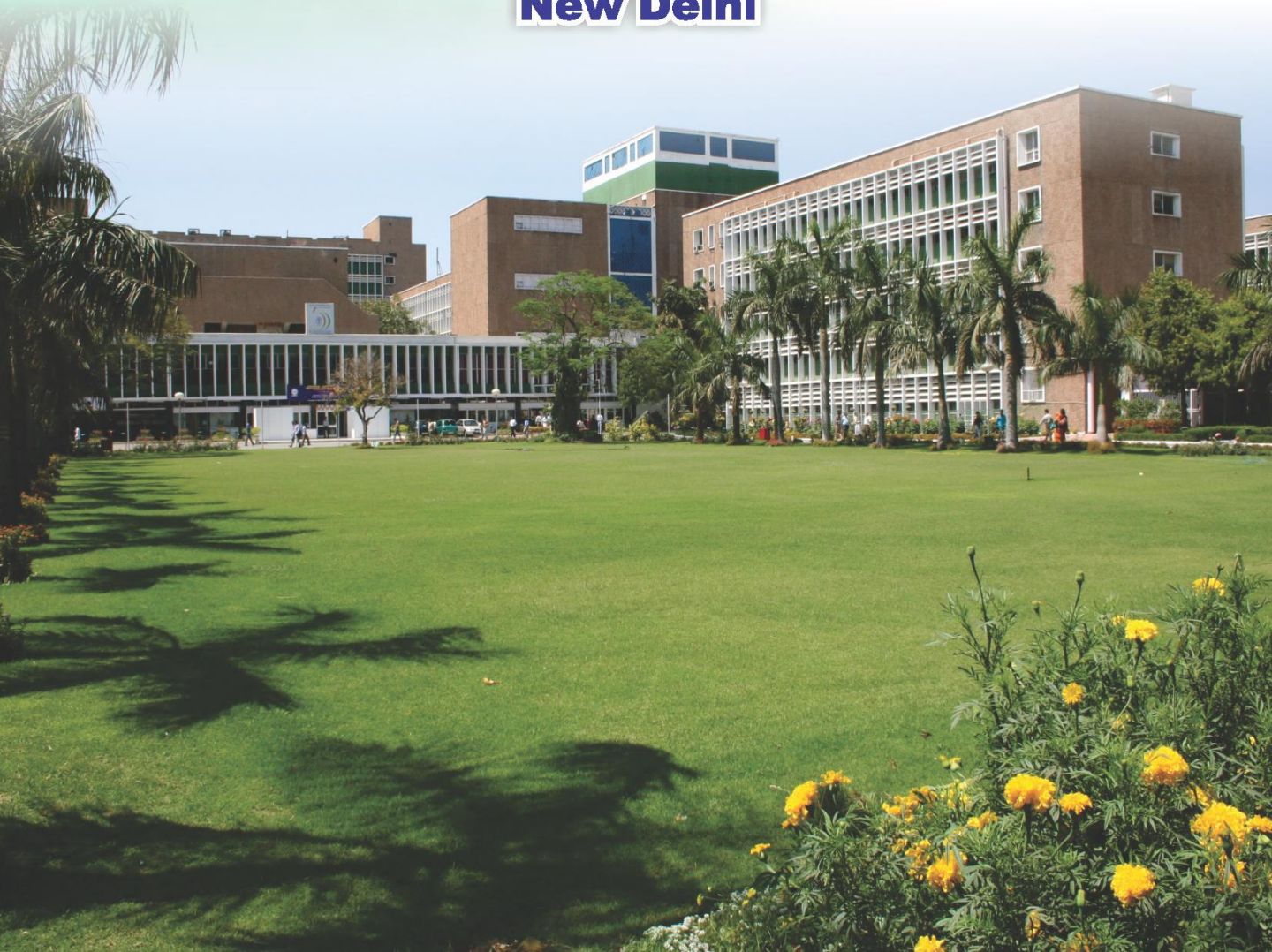

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान
अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

All India Institute of Medical Sciences
Ansari Nagar, New Delhi-110029

प्रो. आर.सी. डेका, निदेशक
Prof. R.C. Deka, Director

मित्रों,

हमारे राष्ट्र के 67वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं। हमारे इतिहास में यह एक महान दिन है। ये दिन विश्व भर में उन पुरुषों एवं स्त्रियों के लिए भी एक महान दिन है, जिन्होंने स्वतंत्रता की अभिलाषा की थी। हमारे राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी ने, स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व करते हुए एक पथ तैयार किया जोकि कई राष्ट्रों के लिए अनुसरण हेतु मॉडल बन गया। इस संग्राम में, गांधी जी ने विश्व को न केवल राजनीतिक नेतृत्व का एक नया मॉडल दिया अपितु राजनीतिक संग्राम में सत्याग्रह एवं अहिंसा के प्रयोग द्वारा संपूर्ण मानवता को एक नया संदेश भी दिया।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं, गांधी जी को एक दुर्लभ श्रृद्धांजलि देते हुए, अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था, "आने वाली पीढियों को, यह बड़ी मुश्किल से विश्वास होगा कि इनकी तरह के हाड़-मांस के किसी व्यक्ति ने कभी इस धरती पर विचरण किया था।"

इस गौरवशाली अवसर पर, मैं आप से अनुरोध करूंगा कि आप मेरे साथ उन सभी महान आत्माओं को अपनी सम्मानपूर्वक श्रृद्धांजलि अर्पित करें जिन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान बलिदान दिए। हम अपने संस्थापक पूर्वजों के प्रति भी आभारी हैं जिन्होंने हमें दूरदर्शिता एवं मार्गदर्शक युक्त एक ऐसा लोकतांत्रिक राष्ट्र दिया जिस पर गर्व किया जा सके।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान देश में चिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान एवं रोगी-उपचार के क्षेत्र में नेतृत्व प्रदान करने के लिए उस महान दूरदृष्टि का हिस्सा है। संस्थान 57 वर्ष का हो गया है। यह आत्मविश्लेषण का समय है।

एक स्वतंत्र राष्ट्र में हमें अपने चुने हुए व्यवसाय को आगे बढ़ाने और अपनी क्षमता का भरपूर उपयोग करने का विकल्प होता है। साथ ही साथ हमारे ऊपर अपने देश, हमारे समाज तथा जिस व्यवसाय में हम हैं और उन लोगों के प्रति, जिन्होंने हमें सेवा करने के लिए शासनादेश दिया है, उत्तरदायी होने की भारी जिम्मेदारी है। स्वतंत्रता एक पूंजी की तरह होती है। आपको इसे अर्जित करना होता है और समझदारी से इसका आनन्द लेना होता है।

हमने एक ऐसे व्यवसाय का चुनाव किया है जिसका हॉलमार्क बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग के साथ कड़ी मेहनत तथा समर्पण है। चिकित्सक अथवा किसी अन्य स्वास्थ्य उपचारकर्ता की समाज में एक विशेष पहचान होती है। हमारे व्यवसाय का मानव जीवन से संबंध है- जो कि ईश्वर की सृष्टि में सबसे अधिक मूल्यवान है। एक बार हम इस बात का स्मरण कर लें तो हमारा कार्य और आसान हो जाता है क्योंकि सेवा का भाव स्वेच्छा से आता है जिससे कि आपकी भावनाएं न केवल उन्नत होती हैं बल्कि आपके उद्देश्य में एक नया अर्थ एवं स्पष्टता भी जोड़ती है और यह उद्देश्य उत्साह के साथ सम्पन्नता लाता है। यह कहने की जरूरत नहीं है कि हमारे व्यवसाय में यह सबसे अधिक संतोषजनक अनुभव है और हममें से प्रत्येक व्यक्ति आखिरकार इस बात को महसूस करता है।

मैं इस अवसर पर इस विशाल संस्थान परिवार में एम.बी.बी.एस. छात्रों के नए बैच का स्वागत करता हूं और इन्हें बधाई देता हूं।

मुझे विश्वास है कि नए विद्यार्थी कैम्पस जीवन एवं शैक्षिक वातावरण के आदी हो जाएंगें। इस परिवार का मुखिया होने के नाते मैं उन्हें हर तरह के सहयोग का आश्वासन देता हूं।

जैसा कि आप जानते हैं कि भारत सरकार द्वारा पिछड़े राज्यों में श्रेष्ठ स्वास्थ्य उपचार प्रदान करने के प्रयास में 6 नए एम्स स्थापित करने की एक विशाल योजना आरंभ की गई है। इनमें से अधिकांश एम्स ने आंशिक रूप से कार्य करना आरंभ कर दिया है। इन सबको पूर्णरूप से क्रियाशील होने में कुछ वर्ष लगेंगे। इन संस्थानों तथा इन जैसे अन्य संस्थानों को विकसित करने में सरकार के सामने कई चुनौतियों में से एक बड़ी चुनौती मानव शक्ति की अपर्याप्त रूप से उपलब्धता होना है- चाहे वे विशेषज्ञ हों अथवा तकनीशियन। यहां पर यह वर्णन करना प्रासंगिक होगा कि 1956 में एम्स की स्थापना हेतु मुख्य लक्ष्यों में से एक लक्ष्य स्वास्थ्य क्षेत्र में शिक्षकों तथा अन्य कर्मचारियों को प्रशिक्षित करना था। निश्चित रूप से संस्थान ने नेतृत्व प्रदान किया परन्तु देश को स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने का शसनादेश अभी भी एक बड़ी चुनौती बना हुआ है। हम इसे और अधिक महसूस करते हैं क्योंकि पूरे देश में बड़े स्तर पर निजी तथा सरकारी क्षेत्रों में नए मेडिकल कॉलेज खोले जा रहे हैं। इस बात पर बल देने की अवश्यकता नहीं है कि किसी भी देश में स्वास्थ्य उपचार कार्यक्रम में श्रेष्ठ आयुर्विज्ञान शिक्षक इसकी रीढ़ की हड्डी होते हैं और भारत में भी यह बात लागू होती है जहां आबादी के एक बड़े भाग की स्वास्थ्य उपचार तक बिल्कुल भी पहुंच नहीं होती है।

दूसरी ओर, हम भाग्यवान हैं कि हम प्रौद्योगिकी और नवीन प्रक्रिया के साथ मिलकर चल रहे हैं। क्या प्रौद्योगिकी मानव-शक्ति का विकल्प हो सकती है?

जैसा कि स्पष्ट रूप से प्रकट होता है कि भारत में चिकित्सा तथा स्वास्थ्य उपचार प्रदान करने के व्यवसाय ने आबादी को स्पष्ट रूप से 'अमीर' और 'गरीब' दो भागों में बांट दिया है। यह सरकार तथा चिकित्सकों दोनों के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। बड़े-बड़े शहरों तथा शहरी क्षेत्रों में हम अस्पतालों, मेडिकल कॉलेजों और विशेषज्ञों की भरमार देखते हैं। शहरों में अस्पताल इतने अच्छे होते हैं कि अन्य देशों से रोगी इलाज के लिए आते हैं जिसने सरकारों तथा उद्यमियों दोनों को चिकित्सा पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया है। दुर्भाग्यवश, जहां तक स्वास्थ्य उपचार का संबंध है, हमारे देश में पूरी ग्रामीण आबादी इससे वंचित है। वहां पर कोई चिकित्सक नहीं हैं, कोई अस्पताल नहीं हैं। उनके पास शहरों में अस्पतालों तक आने का भी कोई साधन नहीं है।

इस प्रकार का द्विभाजन हमारे सम्पूर्ण विकास के लिए एक चुनौती है। इस चुनौती से निपटने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम 'राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन' चलाया गया है परंतु जब तक चिकित्सक तथा अन्य स्वास्थ्य कर्मी गांवों से दूर रहते हैं, इस मिशन का सफल होना कठिन है।

एक अन्य समस्या स्वास्थ्य उपचार में नवीन पद्धति एवं तकनीक की लागत और उसको वहन करने की है। शहरी क्षेत्रों में भी आबादी का एक बड़ा हिस्सा तकनीक आधारित चिकित्सा की लागत को वहन नहीं कर सकता है।

ऐसी कई समस्याएं हैं जो प्रत्येक बुद्धिजीवी भारतीय को परेशान करती हैं परन्तु एक, अच्छे चिकित्सक का कोई विकलप नहीं होता है। यदि हमारे पास हर तरफ अच्छे चिकित्सक हों तो आधी समस्या हल हो जाती है।

आधारभूत संरचना का विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। जब मैंने निदेशक का कार्यभार संभाला तो कुछ परियोजनाओ को नियोजित और कार्यान्वित किया गया। मैं भारत सरकार तथा एम्स के माननीय अध्यक्ष महोदय का इन परियोजनाओं हेतु सहायता प्रदान करने के लिए बहुत आभारी हूं। कन्वर्जेन्स ब्लॉक, मुख्य परिसर से ट्रॉमा केन्द्र तक भूमिगत सुरंग एवं छात्रों तथा कनिष्ठ चिकित्सकों हेतु छात्रावास कॉम्पलेक्स का निर्माण कार्य अगले छः माह में पूरा होने की संभावना है। कन्वर्जेन्स ब्लॉक के अच्छे उपयोग हेतु इसे ज्ञान केन्द्र के रूप में भी उपयोग किया जाना चाहिए।

बहिरंग रोगी उपचार के लिए झज्जर परिसर, बाढ़सा गांव, हरियाण में एक आउटरिज ओ. पी. डी. सुविधा पहले ही आरंभ कर

दी गई है। मैं इन सभी का धन्यवाद करता हूं जो वहां ग्रामीण समुदाय को अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। एम्स परिसर में जिन क्षेत्रों का नवीनीकरण किया गया है उनसे अस्पताल तथा अन्य जन उपयोगी क्षेत्रों को एक अलग प्रकार का रूप मिला है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इससे रोगियों और डॉक्टरों, दोनों के लिए सुविधा होगी। आयुर्विज्ञान नगर परिसर में रिहायशी आवासों के निर्माण की योजना को अंतिम रूप दे दिया गया है और केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग से कार्य को आरंभ करने के लिए कहा गया है। नए रिहायशी आवासों के बनने से निश्चित रूप से आवास के लिए प्रतीक्षारत सभी स्टाफ सदस्यों को खुशी होगी।

मुझे यह अवगत कराते हुए खुशी हो रही है कि पिछले चार वर्षों के दौरान संकाय, वैज्ञानिकों एवं रेजीडेंट डॉक्टरों के बीच अनुसंधान-गतिविधियों में सार्थक रूप से वृद्धि हुई है। संबद्ध अनुसंधान परियोजनाओं से अनेक प्रकाशनों के माध्यम से गुणवत्ता आधारित अनुसंधान की तलाश देखी गई है। एम्स अनुसंधान विशिष्ट पुरस्कार जिसे पिछले साल श्रेष्ठ मौलिक अनुसंधान प्रकाशन हेतु आरम्भ किया गया था, उसका वर्तमान वर्ष के लिए मूल्यांकन किया जा रहा है। जल्दी ही यह घोषणा कर दी जाएगी कि इसका सफल पुरस्कार प्राप्तकर्ता कौन होगा। उक्त पुरस्कार हेतु चुने गए उम्मीदवार को 25 सितम्बर को संस्थान के स्थापना दिवास के अवसर पर नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाएगा।

युवा संकाय-सदस्यों के लिए आंतरिक अनुसंधान निधियों में सार्थक रूप से वृद्धि की गई है। अनेक संकाय-सदस्यों ने इस योजना के माध्यम से नवीन अनुसंधान परियोजनाएं आरंभ की हैं और ऐसी अनुसंधान निधियां प्रदान करने हेतु-बेसिक तथा नैदानिक विभागों, दोनों से ही संकाय उम्मीदवारों द्वारा प्रस्तुत अनेक परियोजनाओं का हमने हाल ही में मूल्यांकन भी किया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि सभी नए सहायक आचार्य तथा अन्य युवा सहयोगी इसे उपयोगी पाएंगे और वे नवीन परियोजनाएं आरंभ करेंगे।

वरिष्ठ संकाय-सदस्यगण जैव आयुर्विज्ञान के अग्रणीय क्षेत्रों में और अधिक अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान निधि प्राप्त करने में सफल रहे हैं। मैं समझता हूं कि नई परियोजनाओं में संरचनात्मक जैव-विज्ञान, वायरल हिपेटाइटिस, प्रतिरक्षा-विज्ञान, जैव-प्रौद्योगिकी, नवजात शिशु विज्ञान, फीटल मेडिसिन, मधुमेह, हृद् विज्ञान एवं आघात सहित तंत्रिका विज्ञान जैसे नये क्षेत्र सम्मिलित होंगे। मानसिक स्वास्थ्य, नशा-मुक्त पदार्थों के सेवन एवं शराब भी चिंता का एक नया विषय है। मुझे यह कहने में खुशी हो रही है कि मनोरोग विभाग एवं गाजियाबाद में स्थित राष्ट्रीय औषध निर्भरता उपचार केन्द्र द्वारा इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया जा रहा है।

समुदाय में जानपदिक रोगविज्ञानी अध्ययन तथा वक्ष, गर्भाशयग्रीवा, मुख विवर कैंसर एवं विभिन्न रक्त कैंसरों तथा इनके उचार से संबंधित चिकित्सा अर्बुद विज्ञान सहित कैंसर ऐसे कुछ अन्य क्षेत्र हैं जिनमें एम्स के संकाय-सदस्यगण गम्भीरतापूर्वक कार्य कर रहे हैं। मैं अपने सभी सहयोगियों को उनकी उपलब्धियों पर बधाई देना चाहूंगा। मुझे आशा है कि इन परियोजनाओं के प्रभावी परिणाम आएंगे तथा हमारे देशवासियों को इनसे लाभ मिलेगा।

पिछले वर्ष एम.बी.बी.एस. छात्रों के लिए आरंभ किए गए व्यक्तित्व एवं शैक्षिक विकास कार्यक्रम से अच्छे परिणाम प्राप्त हुए हैं और हमने यह कार्यक्रम इस वर्ष भी आयोजित किया है। मुझे आशा है कि छात्रों को इस पहल से लाभ होगा।

अंत में, मैं स्वतंत्रता दिवस के खुशनुमा अवसर पर आप सभी के स्वास्थ्य एवं खुशी की कामना करता हूं।

जय हिंद!

आचार्य रमेश सी. डेका

निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी,

एम्स, नई दिल्ली

नई दिल्ली

15 अगस्त, 2013

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान

अंसारी नगर, नई दिल्ली–110029